असमिया साहित्य और समाज में महापुरुष श्रीमंतशंकरदेव का योगदान

नाम-रित्ती कलिता

(शोधार्थी)

कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी

धन्य धन्य कलिकाल धन्य नर तनु भाल

धन्य धन्य भारतवारिषे

शोध सार -

असमिया भाषा, साहित्य और समाज के नवनिर्माण में जिन महानुभावों का नाम लिया जाता है, उनमें महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव प्रमुख हैं। असम भूमि में जन्मे शंकरदेव ने भक्ति के पावन प्रवाह से असम की भूमि को अभिसिंचित किया। असमिया समाज में भक्ति के नाम पर चल रहे आडंबरों को न केवल उन्होंने पहचाना, बल्कि 'एक-शरण नाम धर्म' नामक भक्ति का एक सरल मार्ग भी प्रस्तुत किया। एक-शरण नाम धर्म, जिसे 'नव वैष्णव धर्म' भी कहा जाता है, सभी प्रकार के बाह्य आडंबरों और वर्ण व्यवस्था को नकारता है तथा केवल एक ईश्वर की आराधना पर बल देता है। असमिया साहित्य और समाज को राष्ट्रीय स्तर पर

प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने अपने धर्म प्रचार के लिए 'ब्रजावली' भाषा का प्रयोग किया, जो असमिया और मैथिली भाषाओं का समागम है। साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान अद्‌वितीय है। उन्होंने 'काव्य', 'अंकिया नाट', 'नाटक', और 'अनुवादात्मक रचनाएं' लिखकर असमिया साहित्य को न केवल समृद्‌ध किया, बल्कि उसे नवजीवन प्रदान किया। शंकरदेव की साहित्यिक कृतियों में 'कीर्तनघोषा' को विशेष स्थान प्राप्त है, जिसकी महत्ता असमिया समाज में वाल्मीकि द्‌वारा रचित रामायण से कम नहीं है। आज भारत के अन्य प्रांतों की तुलना में असम में वर्णवादी भेदभाव अपेक्षाकृत कम देखने को मिलता है, जिसका प्रमुख कारण 'शंकरदेव' और उनके साहित्य संस्कृति का प्रभाव है।

<u>बीज शब्द</u> - असमिया जाति, संगीत, भक्ति आन्दोलन, नव-वैष्णव धर्म, असमिया साहित्य, बरगीत, अंकिया नाट, भतिमा, सत्र, नामघर ।

<u>मूल आलेख -</u>

'कुकुर श्रिगाल गर्दभरो आत्मा राम।
जानिया सबाको परि करिबा प्रणाम।।'[1]

श्रीमंत शंकरदेव को असमिया जाति को हरि भक्ति का अमृत रस प्रदान करने और असमिया भाषा, साहित्य व संस्कृति को विश्व मंच पर एक नया स्थान दिलाने का श्रेय दिया जाता है। वे असम के एक महान संत और बहुआयामी प्रतिभा के धनी विद्‌वान थे। शंकरदेव ने असमिया समाज और साहित्य में भक्ति परक जागरूकता लायी, जो धार्मिक होते हुए भी कला, संगीत और साहित्य में गहरा प्रभाव डालने वाला था। उनके भक्ति आंदोलन ने असमिया समाज को एक नयी दिशा दी और संस्कृति को समृद्‌ध बनाया। उनके

योगदान से असमिया साहित्य, कला और संगीत न केवल पुष्पित हुआ , बल्कि समाज में एकता और भातृत्व की भावना भी मजबूत हुई। *“श्रीमंत शंकरदेव ने अपने अवदानों से असम की दशा और दिशा को एक नया मोड़ दिया तथा वृहत्तर असमिया समाज का गठन किया”*2

तत्कालीन समय में ब्राह्मण और शक्ति संप्रदाय द्वारा प्रचलित धर्म में बलि प्रथा और कठोर तंत्र साधना का समावेश था, जो सामान्य जन के लिए कठिन और समाज से दूर था। इस समस्या को शंकरदेव ने गहराई से समझा और एक सरल भक्ति मार्ग का प्रस्ताव रखा, जिसमें जाति, वर्ण या सामाजिक वर्ग का कोई स्थान नहीं था। इसे 'एकशरणीय भागवती नाम धर्म' या 'नव-वैष्णव' धर्म के रूप में जाना जाता है। शंकरदेव ने *"गीता से 'एकशरण-तत्व' और भागवत से 'भक्ति-तत्व' लेकर नाम धर्म का प्रचार किया*।"3 उन्होंने धार्मिक विविधताओं को मिटाते हुए एक ही ईश्वर की आराधना पर बल दिया। उनका मानना था - "एक देव, एक सेव, तेव बिने नाइ केव" (अर्थात, एक ही भगवान, एक ही सेवा, उसके अलावा कोई नहीं)।

शंकरदेव द्वारा प्रचलित नव-वैष्णव धर्म मुख्यतः कृष्ण भक्ति पर आधारित था। कृष्ण भक्ति के प्रचार और प्रसार के लिए उन्होंने साहित्य, कला, और संगीत को माध्यम बनाया। उनके द्वारा रचित साहित्य ने न केवल असमिया साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि आधुनिक असमिया भाषा को सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी ।

धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक सृजन के इस यात्रा में जिस व्यक्ति का साथ उन्हें सबसे अधिक प्राप्त हुआ, वह है उनके प्रिय शिष्य तथा नव-वैष्णव धर्म के अन्यतम प्रचारक महापुरुष ‘माधवदेव’, कहाँ जाता है माधवदेव शंकरदेव से मिलने से पूर्व शक्त थे और बलि-विधान को मानते थे। शंकरदेव ने उनसें शास्त्रार्थ के दौरान उन्होंने भागवत का एक शोल्क कहा था *“यथा तरोर्मूलनिषेचनेन। तृप्यन्ति तत्स्कन्धभुजोपशाखाः।।प्राणोपहाराच्च यथेन्द्रियाणां।*

तथैव सर्वार्हणमच्युतस्य।।" [4] जिससे प्रभावित होकर माधवदेव ने वैष्णव धर्म स्वीकार किया और अंत तक शंकरदेव द्वारा प्रदत्त मार्ग पर चलते रहे।

संस्कृत के विद्वान शंकरदेव ने 'भक्ति-रत्नाकर' को छोड़कर अन्य सभी साहित्यिक रचनाओं में 'असमिया' और 'ब्रजाबोली' भाषा का उपयोग किया। असमिया भाषा का प्रयोग उनके मातृभूमि प्रेम को दर्शाता था, जबकि 'ब्रजाबोली' उनके राष्ट्र प्रेम का प्रतीक थी। 'ब्रजाबोली' भाषा असमिया और मैथिली का मिश्रण थी, जिसे उन्होंने मुख्यतः बरगीत और अंकिया नाट लिखने में प्रयोग किया। शंकरदेव की बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण उनके बचपन से ही मिलने लगा था, जब स्वर और व्यंजन सीखने के बाद उन्होंने अपनी पहली कविता की रचना की।

"करतल कमल दल नयन।

भवनव दहन गहन वन शयन।।

नपर नपर पर सतरत गम ।

सभय मभय भय ममहर सततय ॥"[5]

शंकरदेव का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक योगदान असमिया समाज के लिए अमूल्य है। उनके द्वारा प्रवाहित की गई भक्ति की धारा और साहित्यिक सृजन आज भी असम के लोगों के जीवन में समाहित हैं। शंकरदेव के रचनाएँ, उनके विचार आज भी असमिया साहित्य और संस्कृति के मील के पत्थर मानी जाती हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी रहेंगी।

श्रीमंत शंकरदेव, असम के नव वैष्णव धर्म के प्रवर्तक, केवल एक धार्मिक सुधारक नहीं थे, बल्कि उन्होंने असमिया साहित्य, संस्कृति, कला, संगीत, और

नृत्य में भी क्रांतिकारी योगदान दिया। शंकरदेव का मुख्य उद्देश्य नव वैष्णव धर्म के माध्यम से असम के जनमानस को एक नई दिशा प्रदान करना था। उन्होंने भक्ति आंदोलन को असम के विभिन्न वर्गों के बीच फैलाने के लिए साहित्य, नाटक, और संगीत जैसी कलाओं का सहारा लिया। उनका यह प्रयास असमिया संस्कृति को एक नई पहचान देने में महत्वपूर्ण साबित हुआ। असमिया साहित्य एवं संस्कृति में उनके योगदान को बरगीत, भातिमा, अंकिया नाट, कीर्तनघोषा, नामघर, सत्र, उनके द्वारा प्रचारित मानवीय मूल्यबोध आदि के माध्यम से समझा जा सकता है |

'बरगीत' शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव द्वारा रचित विशिष्ट राग-ताल युक्त गीत हैं। इन गीतों की रचना मुख्यतः नव-वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए की गई थी। इनमें श्रीकृष्ण की लीलाओं के वर्णन के साथ-साथ जीवन की नश्वरता का बोध, मोक्ष प्राप्ति के लिए भगवान की वंदना, दास्य भाव, आदि विषय सम्मिलित हैं।' कथा गुरु चरित' के अनुसार शंकरदेव ने 240 बरगीत लिखे थे, वनअग्नि के कारण आज सब उपलब्ध नहीं है । सभी 'बरगीत' का गाने का एक विशेष समय और राग होता है, जो इन्हें अन्य गीतों से अलग करता है।

(राग - गौरी)

नाहि नाहि रमया बिने ताप तारक कोइ।

परमानन्द पद मकरन्द सेवहु मन मोइ ॥

पद- तीरथ बरत तप जप याग, योग, युगुति।

मंत्र परम धरम करम करत नाहि मुकुति ॥6

शंकरदेव ने असमिया जनमानस में भक्ति की एक नवीन और सरल धारा प्रवाहित करने के उद्देश्य से 'बरगीत' को रचा था। राग-ताल युक्त इन मधुर गीतों को सभी वर्गों ने पसंद किया, चाहे वह गाँव-नगर के पढ़े-लिखे हों या

अनपढ़। इस प्रकार नव-वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ। शंकरदेव ने अपना पहला 'बरगीत' भारत भ्रमण के दौरान लिखा था।

“मन मोरी राम चरणहि लागु ।

तई देखना अंतक आगु ।।”7

'भतिमा' का शाब्दिक अर्थ है 'भक्ति का गीत'। यह भक्ति काव्य शंकरदेव द्वारा जनमानस में नव-वैष्णव धारा के प्रचार और श्रीकृष्ण तथा विष्णु की महत्ता को समझाने के उद्देश्य से रचा गया था। यह असमिया साहित्य का एक अनुपम धरोहर है। शंकरदेव द्वारा रचित गीतों की महत्ता आज भी देखी जा सकती है, जब असम के कोने-कोने में लोग इन गीतों को गाते हैं।

‘कीर्तन घोषा’ शंकरदेव के साहित्य का केंद्रबिंदु है। इसका महत्व असमिया समाज में उतना ही है, जितना वाल्मीकि रामायण का है। धार्मिक अनुष्ठानों में इसका पाठ अनिवार्य होता है। उस समय जब भक्ति मार्ग पर चलने के लिए कठिन तप और जटिल मंत्रों का जाप आवश्यक माना जाता था, शंकरदेव ने जनमानस की इस समस्या को समझा और सरल भाषा में 'कीर्तन घोषा' की रचना की। इससे सभी वर्गों के लोग भक्ति के इस सहज मार्ग को अपनाने के लिए सक्षम हुए। 'कीर्तन घोषा' में मुख्य रूप से श्रीकृष्ण की स्तुति और भगवान को पाने का मार्ग श्रुति और नाम जप को माना गया है। शंकरदेव ने यहाँ कहा है -‘राम नाम मणि दीप धरू जीह देहरी द्वार"(अर्थ: अपनी जीभ के द्वार पर राम के नाम रूपी दीपक को रखो, जिससे तुम्हारे जीवन के अंधकार दूर हो जाएंगे) और ‘हरि बोल हरि बोल’ जैसी पंक्तियाँ कीर्तन में बार-बार आती हैं, जो नाम जप की महत्ता को उजागर करती हैं। *“एइखनेइ हो’ल कीर्तन-घोषा जि असमीयार मौ-चाक स्वरूप आरु जिखनि पुथिये आमार जातीय जीबनर ऊपरत प्रभाब बिस्तार करेछे। एइ पुथितेइ संक्षेपे श्रीशंकरदेवोर प्राय सकोलखिनि धर्ममत*

पावा जाए|"8 (अर्थात कीर्तन-घोषा असमिया संस्कृति में मधुमक्खी के छत्ते के समान है और जिसने हमारे राष्ट्रीय जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है। इसी ग्रंथ में संक्षेप में श्रीमंत शंकरदेव के लगभग सभी धार्मिक विचार प्राप्त होते हैं।)

'गुणमाला' शंकरदेव द्वारा रचित एक और महत्वपूर्ण कृति है। कोचराजा नरनारायण के आग्रह पर शंकरदेव ने एक रात के भीतर ही भगवत पुराण के सार को 'गुणमाला' में लिपिबद्ध किया। इस कृति को 6 अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिनमें पहले अध्याय में कृष्ण की बाल लीलाओं के साथ-साथ विष्णु के दस अवतारों का उल्लेख किया गया है। शंकरदेव ने इसे 'हाथी मरी भुरुकात भोड़ोवा' कहा था, जिसका अर्थ है किसी बड़े कार्य को छोटे साधनों से पूरा करना।

शंकरदेव के समय में असम में संस्कृत भाषा के ज्ञाता बहुत कम थे, जिसके कारण लोग भागवत को पढ़ नहीं पाते थे। शंकरदेव ने भागवत का असमिया में अनुवाद कर न केवल असमिया साहित्य को समृद्ध किया बल्कि भगवत भक्ति का भी प्रचार किया। उन्होंने भागवत के तृतीय और चतुर्थ स्कंध को छोड़कर सभी स्कंधों का असमिया अनुवाद किया। इसके अलावा, उन्होंने वाल्मीकि रामायण के 'उत्तरकांड' का भी असमिया में अनुवाद किया। इससे पहले, माधव कंदली ने असमिया भाषा में रामायण का अनुवाद किया था, जिसे शंकरदेव और माधवदेव ने ढूंढ़ने का प्रयास किया था। सप्तकांड रामायण के पाँच कांड तो मिल गए, लेकिन बालकांड और उत्तरकांड प्राप्त नहीं हुए। अतः माधवदेव ने बालकांड और शंकरदेव ने उत्तरकांड की रचना कर असमिया साहित्य को समृद्ध किया।

'अंकिया नाट' असम के साहित्य और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अनपढ़ लोगों में धार्मिक जागरण लाने के लिए शंकरदेव ने इन नाटकों का आयोजन और रचना की। पौराणिक आख्यानों पर आधारित इन नाटकों का मुख्य उद्देश्य वैष्णव धर्म का प्रचार करना था। भागवत, महाभारत, रामायण और पुराणों पर आधारित इन नाटकों में गीत, नृत्य और अभिनय के माध्यम

से विष्णु के अवतारों की लीलाओं का वर्णन किया जाता था। असमिया भाषा में इसे 'भाओना' भी कहा जाता है। शंकरदेव ने अपने पहले अंकिया नाट 'चिन्ह यात्रा' में पहली बार 'मुखौटा' का प्रयोग किया था, जिससे पात्रों को और अधिक जीवन्तता प्रदान की जा सके। उनके द्वारा रचित अन्य महत्वपूर्ण अंकिया नाटों में 'रुक्मिणी हरण', 'कालिया दमन', 'केलि गोपाल', 'पारिजात हरण', और 'राम विजय' सम्मिलित हैं।

शंकरदेव का काव्य रचना के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है। उनके द्वारा रचित काव्य ने असमिया साहित्य को समृद्ध किया और आधुनिक असमिया भाषा को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसमें 'हरिश्चन्द्र उपाख्यान', 'रुक्मिणीहरण काव्य', 'बलिछलन', 'अमृत-मंथन', 'अजामिल उपाख्यान', 'कुरुक्षेत्र'आदि प्रमुख है ।

शंकरदेव का सबसे महत्वपूर्ण योगदान सत्रों की स्थापना है। सत्र असमिया समाज के लिए एक प्रकार का सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र था, जहां लोग एकत्रित होकर हरि-भक्ति का कीर्तन, मनन, और चर्चा करते थे।जिस प्रकार बौद्ध धर्म में 'मठ' परम्परा है उसी प्रकार नव-वैष्णव धर्म में सत्रों की परम्परा है । शंकरदेव ने असम के विभिन्न क्षेत्रों में सत्रों की स्थापना की, जो नव वैष्णव धर्म के प्रचार का प्रमुख केंद्र बन गए। सत्रों के माध्यम से शंकरदेव ने समाज में समानता और भ्रातृत्व की भावना को बढ़ावा दिया। तत्कालीन असमिया समाज में धर्म के नाम पर फैले अंधविश्वासों और जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से उन्होंने सत्रों का निर्माण किया, जहाँ सभी वर्गों के लोग समान रूप से भाग ले सकते थे। सत्र धार्मिक तथा सांस्कृतिक के साथ साथ सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक सभी गतिविधियों का चर्चा स्थान था । यहाँ गुरु-शिष्य परम्परा का भी स्थान है ।

सत्र में एक 'सत्राधिकार' रहता है, जो सत्र के सभी गतिविधियों का देख रेख करता है । तत्कालीन समय में सत्र का महत्व असमिया समाज में इतना अधिक था की सत्रों को राजाओं द्वारा अनुदान मिलता था ।

सत्रों की स्थापना के पीछे शंकरदेव का उद्देश्य एक समृद्ध सामाजिक और सांस्कृतिक धारा को पुनः जागृत करना था। सत्रों में वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती थीं, जिसमें संगीत, नृत्य, और नाटक शामिल थे। सत्रीय नृत्य, अंकिया नाट, और बरगीत जैसे सांस्कृतिक तत्वों ने सत्रों को असमिया समाज का एक अभिन्न अंग बना दिया।

सत्रों के साथ-साथ शंकरदेव ने 'नामघर' की परंपरा को भी शुरू किया। नामघर एक प्रकार का सामुदायिक प्रार्थना स्थल है, जहाँ लोग मिलकर हरि-नाम का कीर्तन करते हैं। यहाँ गीत और नाम कीर्तन करने वाले लोगों को *'भकत'* [9] कहाँ जाता है| और इन भकतो में छोटे बड़े का भेद नहीं रहता "*हरि भकतर नाई सरू-बर*"[10] शंकरदेव ने मूर्ति पूजा प्रथा का विरोध किया और इसके स्थान पर 'थापना' की स्थापना की, जिसमें 'भागवत' को रखा जाता है और उसकी पूजा की जाती है। शंकरदेव ने पहला नामघर नगांव जिले के बरदोवा में स्थापित किया था। नामघर केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण साबित हुए।

आज भी असम के नामघरों में शंकरदेव द्वारा रचित गीतों की गूंज सुनाई पड़ती है |

सत्रीय नृत्य शंकरदेव की सृष्टि है, जो आज विश्वभर में प्रसिद्ध है। सत्रीय नृत्य का आरंभ सत्रों में ही हुआ, इसलिए इसे 'सत्रिया नृत्य' कहा जाता है। यह नृत्य शैली वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए बनायी गयी थी, जिसमें भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण की लीलाओं का चित्रण किया जाता है। सत्रीय नृत्य एक शास्त्रीय नृत्य शैली है, जिसे बाद में भारतीय शास्त्रीय नृत्य के रूप में भी मान्यता प्राप्त हुई। आज असम के साथ साथ सम्पूर्ण विश्व में 'सत्रीया' नित्य

की अपनी अलग पहचान है । शंकरदेव द्वारा प्रचलित करने के कारण स्थान विशेष में इसे 'शंकरी नित्य' भी कहा जाता है ।

शंकरदेव ने अपने भक्ति धर्म प्रचार हेतु मनोरंजन को एक माध्यम बनयाया । इस उदेश्य से उन्होंने अंकिया नाटों में मुखौटों का प्रचलन किया । राक्षस, देवता तथा अन्य पौराणिक चरित्र मुखौटों के माध्यम से अभिनय करने लगा। मुखौटें चरित्र को जीवन्तता प्रदान करने के साथ साथ, दर्शकों को साधारणीकरण में सहायता करता है ।

शंकरदेव ने वैष्णव धर्म के हेतु असमिया बुनकरों द्वारा 'वृन्दावनी वस्त्र' बुनकर निकला । आज जिस "गामोचा" की कारीगरी ने विश्व भर का ध्यान आकर्षित किया, उसी का ही एक बड़ा रूप है वृन्दावनी वस्त्र ।16वीं शताब्दी में बुना गया इस वस्त्र के प्रमुख बुनकार थे बारपेटा सत्र के प्रथम सत्राधिकार 'मथुरादास आटा' । इसमें श्रीकृष्ण के बाल लीलाओं का वर्णन बुनकर दिखाया गया है । दुःख का विषय यह है कि असम का यह प्रमुख सम्पद आज असम भूमि में न होकर लन्दन के संग्रहालय में है ।

शंकरदेव ने न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक सुधारों की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने असमिया समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और अंधविश्वासों का कड़ा विरोध किया। उनके सत्रों और नामघरों में सभी वर्गों के लोग समान रूप से भाग लेते थे, चाहे वे किसी भी जाति या समुदाय से हों। उन्होंने भक्ति के माध्यम से समाज में समानता, भ्रातृत्व और मानवता की भावना को बढ़ावा दिया।

शंकरदेव का योगदान असमिया समाज के लिए अमूल्य है। उन्होंने अपने साहित्य, कला, संगीत, नृत्य, और धर्म के माध्यम से असमिया संस्कृति को एक नई दिशा दी। शंकरदेव के सत्र, नामघर, बरगीत, अंकिया नाट, और सत्रीय

नृत्य आज भी असमिया समाज के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। उनके द्वारा प्रवाहित की गई भक्ति की धारा और उनके सांस्कृतिक योगदान ने असमिया समाज को एक नई पहचान दी, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

निष्कर्ष -

श्रीमंत शंकरदेव ने मृतप्राय असमिया समाज को भक्ति का अमृत पान कराकर नवजीवन प्रदान किया। उनका असमिया संस्कृति और समाज में योगदान केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक सुधारों के रूप में भी अतुलनीय है। असम का यह महापुरुष आज भी अपने साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान के कारण असमिया जनता के हृदय में जीवित है। शंकरदेव ने भक्ति धर्म के प्रचार में जितनी महत्ता पढ़े-लिखे जनसामान्य को दी, उतनी ही महत्व अनपढ़ लोगों को भी भक्ति का सार समझाने में दी। उन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से एक शांति और अहिंसा से परिपूर्ण, जाति-भेद रहित समाज के निर्माण का प्रयास किया। उनका योगदान असमिया समाज में एकता और सुधार का प्रतीक है। अंत में माधवदेव द्वारा अपने गुरु पर लिखी गयी एक पंक्ति -

"दर्शिते सुंदर गौर कलेवीर, योचन सुर परकाश।

सकल सभासदरण्जन याकेरि दर्शने पाप बिनाश।।

बिना अंगभूषण, पेखिते सुशोभन, गहीन गंभीर धीर मूर्ति।

आयत कमल-नयन बर सुंदर बयन चाँदकोहो ज्योति।।"[11]

सहायक ग्रन्थ सूची

1. चैयद अब्दुल मालिक, "धन्य नर तनु भाल" स्टूडेंट स्टोर, 2008 पृ- 429

2. सौमित्रम, "असम के विशिष्ट हिन्दीभाषी व्यक्तित्व", लिपि कंपोज, 2023 पृ-16

3. सं. भूपेंद्र राय चौधुरी, "असमिया साहित्य निकष", गुवाहाटी यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017 पृ-21

4. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ, 'श्री श्री शंकरदेव आरू माधवदेव', वनलता प्रकाशन, 2012, पृ-46

5. वही, पृ- 16

6. सं. भूपेंद्र राय चौधुरी, "असमिया साहित्य निकष", गुवाहाटी यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017 पृ-57

7. वही, पृ-56

8. हरप्रसाद नेओग और लीला गोगोई, 'असमिया संस्कृति', वनलता प्रकाशन, 2013 पृ-246

9. चैयद अब्दुल मालिक, "धन्य नर तनु भाल" स्टूडेंट स्टोर, 2008 पृ. 290

10. वही

11. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ, 'श्री श्री शंकरदेव आरू माधवदेव', वनलता प्रकाशन, 2012, पृ-18